नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651 मो.9960562305 इ-मेल: mgahvpro@gmail.com

वेबसाइट : www.hindivishwa.org

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद प्रायोजित, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा

हिंदी विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी उदघाटीत

सकारात्मक पत्रकारीय भाव से मीडिया कर सकता है सामाजिक बदलाव-अच्युतानंद मिश्र

वर्धा, दि.28 जुलाई 2015: आध्यात्मिकता का संबंध किसी धर्म या विचारधारा से नहीं बल्कि यह नैतिक आदर्श है। इसका संबंध व्यक्ति के मन और ज्ञान की परंपरा से है और यह उपदेश मूलक भी नहीं अपितु आचरण मूलक है। आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव जैसे तीनों तत्व महात्मा गांधी के जीवन में देखे जा सकते हैं। मीडिया के माध्यम से सामाजिक बदलाव के लिए हमें सकारात्मक पत्रकारीय भाव रखना चाहिए। उक्त उदबोधन वरिष्ठ पत्रकार एवं माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल के पूर्व कुलपति अच्युतानंद मिश्र ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के "संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र द्वारा आध्यात्मिकता, मीडिया और सामाजिक बदलाव" विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उदघाटन सत्र में बोल रहे थे।

संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र की ओर से आयोजित इस संगोष्ठी का उदघाटन मंगलवार को विश्वविद्यालय के हबीब तनवीर सभागार में हुआ। उदघाटन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति

प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं

जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति प्रो. मानसिंह परमार तथा दूरदर्शन समाचार, नई दिल्ली के परामर्श संपादक के. जी. सुरेश, मदन मोहन मालवीय हिंदी पत्रकारिता संस्थान, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पूर्व निदेशक प्रो. राम मोहन पाठक, प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र, विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय मंचासीन थे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता करने वाले लोग मूलत: आध्यात्म से जुड़े हुए थे। गांधी जी के द्वारा प्रकाशित पांचों अखबारों में एक नैतिकता प्रदर्शित होती थी। वे मानते थे कि आध्यात्म का क्षरण पश्चिमी देशों के कारण हुआ है। नैतिकता मीडिया आध्यात्म की शक्ति है जो स्वाधीनता आंदोलन के समय चरम पर थी। परंतु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद नैतिकता के मूल्य धीरे-

धीरे कमजोर पड़ते गये और पूरे विश्व का परिदृश्य बदलता गया। वहीं से मीडिया के क्षेत्र में नैतिकता में गिरावट आयी है। प्रो. मानसिंह परमार ने गीता के श्लोकों का उल्लेख करते हुए क्हा कि सबसे प्यार करना, सबमें अच्छाई तलाशना और सकारात्मक भाव से ही मीडिया में आध्यात्मिकता का भावबोध पैदा किया जा सकता है और इसी से सामाजिक बदलाव हो सकता है। उन्होंने कहा कि मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया की तर्ज पर मीडिया काउंसिल ऑफ इंडिया का गठन किया जाना चाहिए जो मीडिया और नैतिकता को लेकर मानक तैयार कर सके।

दूरदर्शन के वरिष्ठ परामर्श संपादक के. जी. सुरेश ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में 'पत्र' कम और 'कार' ज्यादा हुए है। आज स्थिति यह है कि पत्रकारिता में नैतिकता का संकट पैदा हो गया है। विचार और समाचार का मिश्रण हो रहा है और हम सुने बगैर बोलते है और पढ़े बगैर लिखते हैं। जन आधारित पत्रकारिता की बात करते हुए उन्होंने कहा कि मीडिया को दोनों पक्षों की बात करनी चाहिए। एक पत्रकार को अपनी लक्ष्मण रेखा खुद ही तय करनी होगी और सामाजिक सरोकार की पत्रकारिता की ओर बढ़ना होगा। बीज वक्तव्य में प्रो. राम मोहन पाठक ने कहा कि संचार की मूल अवधारणा सांस से शुरू होकर अनेक लोगों तक पहुंचती है। मीडिया में सकारात्मकता ही उसकी आध्यात्मिकता है जो वैयक्तिक संचार से भी पहचानी जा सकती है।

सार वक्तव्य में प्रतिकुलपति प्रो. चित्तरंजन मिश्र ने कहा कि सहस्त्र बाहू फैलाए हुए इस मीडिया के समय में अपने-आप को पहचानना ही आध्यात्मिकता है। हमारे समय के मीडिया का चरित्र 'है' केंद्रित हो गया है। हमें क्या होना चाहिए इसपर विचार करना चाहिए।

अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि मीडिया, प्रक्रिया, उपकरण और परिणाम भी है। उन्होंने कहा कि स्वयं के उपर नियंत्रण ही आध्यात्म है। हाल ही के मीडिया चरित्र पर उन्होंने कहा कि मीडिया ने जीवन का व्याकरण ही बदल दिया है। टीवी, इंटरनेट मनुष्य के माइंड को कंट्रोल कर रहा है। वह भारी शक्ति के रूप में उभर रहा है। नयी पीढ़ी में इंटरनेट एडिक्शन का फैलाव बढ़ गया। उन्होंने आहवान किया कि मन रूपी बेलगाम घोड़े को आत्म-नियमन एवं स्व-नियंत्रण से ही

नियंत्रित किया जा सकता है। उन्होंने माना कि बड़े सामाजिक बदलाव का माध्यम मीडिया बना हुआ है।

उदघाटन के प्रारंभ में पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। अतिथियों द्वारा उनके जीवन एवं कार्यों पर प्रकाश ड़ाला गया। इस अवसर पर अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अध्यक्ष प्रो. देवराज ने कविता 'एक छतमार महावृक्ष धरती पर आ गिरा' के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की।

उदघाटन सत्र में संगोष्ठी स्मारिका एवं शोध पत्र पर आधारित पुस्तक का लोकार्पण अतिथियों के द्वारा किया गया।

अतिथियों का स्वागत एवं परिचय संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल कुमार राय ने किया। कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी संयोजक डॉ. अख्तर आलम ने किया तथा आभार ज्ञापन सहायक प्रोफेसर डॉ. धरवेश कठेरिया ने किया। इस अवसर पर विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधि, शोधार्थी एवं प्रतिभागी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।